CHAPTER - 3

प्रश्नावली (उत्तर सहित)

1. वर्चस्व के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग़लत है?
   (क) इसका अर्थ किसी एक देश की अगुआई या प्राबल्य है।
   (ख) इस शब्द का इस्तेमाल प्राचीन यूनान में एथेंस की प्रधानता को चिह्नित करने के लिए किया जाता था।
   (ग) वर्चस्वशील देश की सैन्यशक्ति अजेय होती है।
   (घ) वर्चस्व की स्थिति नियत होती है। जिसने एक बार वर्चस्व कायम कर लिया उसने हमेशा के लिए वर्चस्व कायम कर लिया।

उत्तर (घ) वर्चस्व की स्थिति नियत होती है। जिसने एक बार वर्चस्व कायम कर लिया उसने हमेशा के लिए वर्चस्व कायम कर लिया।

2. समकालीन विश्व-व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग़लत है?
   (क) ऐसी कोई विश्व-सरकार मौजूद नहीं जो देशों के व्यवहार पर अंकुश रख सके।

eVidyarthi

(ख) अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अमरीका की चलती है।
(ग) विभिन्न देश एक-दूसरे पर बल-प्रयोग कर रहे हैं।
(घ) जो देश अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करते हैं उन्हें संयुक्त राष्ट्रसंघ कठोर दंड देता है।

उत्तर (क) ऐसी कोई विश्व-सरकार मौजूद नहीं जो देशों के व्यवहार पर अंकुश रख सके।

3. 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' (इराकी मुक्ति अभियान) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग़लत है?
(क) इराक पर हमला करने के इच्छुक अमरीकी अगुआई वाले गठबंधन में 40 से ज्यादा देश शामिल हुए।
(ख) इराक पर हमले का कारण बताते हुए कहा गया कि यह हमला इराक को सामूहिक संहार के हथियार बनाने से रोकने के लिए किया जा रहा है।
(ग) इस कार्रवाई से पहले संयुक्त राष्ट्रसंघ की अनुमति ले ली गई थी।
(घ) अमरीकी नेतृत्व वाले गठबंधन को इराकी सेना से तगड़ी चुनौती नहीं मिली।

उत्तर (ग) इस कार्रवाई से पहले संयुक्त राष्ट्र संघ की अनुमति ले ली गई थी।

4. इस अध्याय में वर्चस्व के तीन अर्थ बताए गए हैं। प्रत्येक का एक-एक उदाहरण बतायें। ये उदाहरण इस अध्याय में बताए गए उदाहरणों से अलग होने चाहिए।

उत्तर अध्याय में वर्णित वर्चस्व के तीन अर्थ निम्नलिखित हैं–
(*i*) वर्चस्व-सैन्य शक्ति के अर्थ में। (*ii*) वर्चस्व-ढाँचागत ताकत के अर्थ में। (*iii*) वर्चस्व-सास्कृतिक अर्थ में।

(*i*) *वर्चस्व–सैन्य शक्ति के अर्थ में :* वर्चस्व का अर्थ सैन्य शक्ति के अर्थ में होता है। वर्तमान में अमरीका की रीढ़ उसकी सैन्य शक्ति है। आज अमरीका अपनी सैन्य क्षमता के बल पर पूरी दुनिया में कहीं भी निशाना साध सकता है एवं आज कोई भी देश अमरीकी सैन्य ताकत के मुकाबले उसके आस-पास कहीं भी नहीं है। उदाहरण के लिए–सोवियत संघ ने जब क्यूबा में मिसाइलें लगा लीं तो अमरीका ने उसे अपनी सैन्य शक्ति का वर्चस्व दिखाते हुए कहा कि या तो क्यूबा सोवियत संघ को मिसाइल हटाने के लिए शीघ्र कहे और वह हटा ले नहीं तो युद्ध के लिए तैयार हो जाए।
इसी संदर्भ में अभी हाल के समय (2006-07) में अमरीका ईरान को बार-बार सैन्य शक्ति का हवाला दे रहा था कि या तो परमाणु परीक्षण बंद करे नहीं तो उसके विरुद्ध कभी भी युद्ध छेड़ा जा सकता है।

(*ii*) *वर्चस्व–ढाँचागत ताकत के अर्थ में :* वर्चस्व का दूसरा अर्थ है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी मर्जी चलाने वाला एक ऐसा देश जो अपने मतलब की चीजों को बनाए और कायम रखे। हम जानते हैं कि अमरीका विश्व के प्रत्येक भाग, वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र और प्रौद्योगिकी के प्रत्येक भाग में मौजूद है। उदाहरण के लिए–अमरीका अनेक देशों को कह चुका है कि वह विश्व के सभी समुद्री मार्गों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए पूर्णतया खुला रखें क्योंकि मुक्त व्यापार समुद्री व्यापारिक मार्गों के खुलेपन के बिना संभव नहीं है। यह धमकी वास्तव में वह जापान, ताइवान, खाड़ी देशों आदि को दे चुका है। अमरीका अपनी ढाँचागत ताकत को दिखाने के लिए अनेक छोटे-बड़े देशों को कह चुका है कि 'जो भी उदारीकरण और वैश्वीकरण को नहीं अपनाएगा या परमाणु परीक्षण निषेध संधि पर हस्ताक्षर नहीं करेगा' उसे विश्व बैंक या अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष आदि से ऋण देने के बारे में या तो कटौती की जा सकती है या उस पर पूर्ण प्रतिबंधा लग सकता है। जनसंचार माध्यमों से जानकारी मिलती है कि अमरीका समय-समय पर आर्थिक प्रतिबंध लगाता रहा है।

(*iii*) *वर्चस्व सांस्कृतिक अर्थ में :* वर्चस्व के इस तीसरे अर्थ का संबंध सहमति गढ़ने की शक्ति से है। अर्थात् कोई प्रभुत्वशाली वर्ग या देश अपने प्रभाव में रहने वालों को इस प्रकार सहमत कर सकता है कि वे भी विश्व को उसी दृष्टिकोण से देखें जिसमें वह देखता है। उदाहरण के लिए–अमरीकी विचारधारा अर्थात् पूँजीवादी विचारधारा सभी पूर्व साम्यवादी यूरोपीय देशों पर लाद दी गई और वह उनसे सहमति बनवाने में सफल रहा। अमरीका अंतर्राष्ट्रीय मंचों से कई बार स्पष्ट कर चुका है कि जो भी राष्ट्र नई अर्थव्यवस्था अर्थात् उदारीकरण और वैश्वीकरण को नहीं अपनाएगा उन देशों में बहु-राष्ट्रीय कंपनियाँ निवेश नहीं करेंगी और अमरीका भी ये चाहता है। वह धीरे-धीरे सभी पूर्व साम्यवादी देशों यहाँ तक कि वर्तमान रूस और चीन को भी किसी सीमा तक अपने तीसरे अर्थ के वर्चस्व अर्थात् सांस्कृतिक वर्चस्व में लाने में कामयाब हो रहा है। अमरीका का घोर विरोधी चीन बड़ी तेजी से उदारीकरण, विदेशी निवेश आदि की ओर बढ़ रहा है।

5. उन तीन बातों का जिक्र करें जिनसे साबित होता है कि शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अमरीकी प्रभुत्व का स्वभाव बदला है और शीतयुद्ध के वर्षों के अमरीकी प्रभुत्व की तुलना में यह अलग है।

उत्तर *शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद अमरीकी प्रभुत्व की प्रकृति में बदलाव (Change in the Nature of US Dominance after Cold War) :* वैसे तो दूसरे विश्वयुद्ध के बाद ही अमरीका ने विश्व राजनीति में अपना प्रभुत्व प्रदर्शित करना आरंभ कर दिया था परंतु वह दादागिरी की प्रकृति का नहीं था क्योंकि उस समय उस के प्रभुत्व को, उसकी शक्ति को सोवियत संघ चुनौती देता रहता था और उसे अपने गठबंधन को मजबूत बनाए रखने के लिए अपने सहयोगियों तथा छोटे-छोटे देशों की भी आवश्यकता महसूस होती थी और वह पूर्ण रूप से मनमानी नहीं कर पाता था। परंतु शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद उसके प्रभुत्व की प्रकृति में बदलाव आया और वह दादागिरी की तरह व्यवहार करने लगा। इसके तीन उदाहरण निम्नलिखित हैं–

Chapter-3

1. 1990 में पहला खाड़ी युद्ध हुआ था जो इराक को कुवैत से भगाने के लिए किया गया था। उस समय भी इसमें लगभग 3/4 से अधिक सैन्य शक्ति अमरीका की थी। यह संयुक्त राष्ट्र के आधार पर किया गया था। 2003 में अमरीका ने जब इराक पर आक्रमण किया तो उसे संयुक्त राष्ट्र की अनुमति की आवश्यकता नहीं पड़ी। अपने सहयोगी राष्ट्रों जैसे कि फ्रांस और रूस तथा संयुक्त राष्ट्र के विरोध के बावजूद भी उसने सार्वजनिक नरसंहार के हथियारों का बहाना करके इराक पर आक्रमण कर दिया जो कि अन्तर्राष्ट्रीय कानून तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धांतों के विपरीत था।
2. 1999 में युगोस्लाविया के क्षेत्र पर नाटो द्वारा की गई बमबारी इसका एक और उदाहरण है। युगोस्लाविया के प्रांत कोसोवो में अल्बानियाई लोगों द्वारा किए गए आंदोलन को कुचलने के लिए यह बमबारी की गई थी जो लगभग दो महीने तक चली। यह भी संयुक्त राष्ट्र की अनुमति के बिना तथा अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की अवहेलना करते हुए की गई थी।
3. 9/11 की घटना अथवा 11 सितंबर, 2001 में अमरीका के महत्त्वपूर्ण भवनों पर आतंकवादी हमलों के बाद अमरीका ने सारे संसार से आतंकवाद को समाप्त करने के लिए, ऑपरेशन एन्डयूरिंग फ्रीडम चलाया और अफगानिस्तान की तालिबान सरकार पर आक्रमण कर दिया। अफगानिस्तान से तालिबान सरकार को समाप्त किया गया और अमरीका की पसंद की सरकार स्थापित की गई। इसके साथ ही अमरीकी सेनाओं ने सारे संसार में गिरफ्तारियाँ कीं और बंदी बनाए गए लोगों को यातनाएँ दीं तथा उन्हें कानूनी सहायता से भी वंचित रखा। आतंकवादी होने के शक में लोगों को कानूनों का उल्लंघन करते हुए लंबे समय तक बंदी बनाए रखा और अपने कानूनों तथा अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का भी उल्लंघन किया। यह भी दादागिरी का एक नमूना है।

6. निम्नलिखित में मेल बैठायें –

(1)	ऑपरेशन इनफाइनाइट रीच	(क)	तालिबान और अल-कायदा के खिलाफ जंग
(2)	ऑपरेशन इंड्यूरिंग फ्रीडम	(ख)	इराक पर हमले के इच्छुक देशों का गठबंधन
(3)	ऑपरेशन डेजर्ट स्टार्म	(ग)	सूडान पर मिसाइल से हमला
(4)	ऑपरेशन इराकी फ्रीडम	(घ)	प्रथम खाड़ी युद्ध।

उत्तर

(1)	ऑपरेशन इनफाइनाइट रीच	(ग)	सूडान पर मिसाइल से हमला।
(2)	ऑपरेशन इड्यूरिंग फ्रीडम	(क)	तालिबान और अल-कायदा के खिलाफ जंग।
(3)	ऑपरेशन डेजर्ट स्टार्म	(घ)	प्रथम खाड़ी युद्ध।
(4)	ऑपरेशन इराकी फ्रीडम	(ख)	इराक पर हमले के इच्छुक देशों का गठबंधन।

7. अमरीकी वर्चस्व की राह में कौन-से व्यवधान हैं। आप जानते इनमें से कौन-सा व्यवधान आगामी दिनों में सबसे महत्त्वपूर्ण साबित होगा?

उत्तर अमरीकी वर्चस्व की राह में निम्नलिखित प्रमुख व्यवधान हैं–

(i) संयुक्त राज्य अमरीकी वर्चस्व की सबसे बड़ी बाधा खुद उसके वर्चस्व के अंदर उपलब्ध है। अमरीकी शक्ति की राह में तीन अवरोध हैं। 11 सितंबर, 2001 की घटना के बाद के सालों में ये व्यवधान एक तरह से निष्क्रिय प्रतीत होने लगे थे। लेकिन धीरे-धीरे फिर प्रकट होने लगे हैं। पहला व्यवधान खुद अमरीका की संस्थागत बनावट है यहाँ शासन के तीन अंगों के बीच शक्ति का विभाजन है और यही बनावट कार्यपालिका द्वारा सैन्य ताकत के बेलगाम इस्तेमाल पर नियंत्रण करने का काम करती है।

(ii) अमरीका की शक्ति के आड़े आने वाली दूसरी बाधा भी अंदरूनी है। इस बाधा के जड़ में है अमरीकी समाज जो अपनी प्रकृति में उन्मुक्त है। अमरीका में जन-संचार के साधन समय-समय पर वहाँ के जनमत को एक विशेष दिशा में मोड़ने का भले ही प्रयास करें लेकिन अमरीकी राजनीतिक संस्कृति में शासन के उद्देश्य और तरीके को लेकर गहरे संदेह का भाव भरा है। अमरीका के विदेशी सैन्य-अभियानों पर नियंत्रण रखने में यह बात बड़ी कारगर भूमिका निभाती है।

(iii) अमरीकी शक्ति की राह में मौजूद तीसरी बाधा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में आज केवल एक संगठन है जो संभवतया अमरीकी शक्ति पर नियंत्रण रख सकता है और इस संगठन का नाम है 'नाटो' अर्थात् उत्तर अटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन। स्पष्ट ही अमरीका का बहुत बड़ा हित लोकतांत्रिक देशों के इस संगठन को बरकरार रखने से जुड़ा है क्योंकि इन देशों में बाज़ारमूलक अर्थव्यवस्था चलती है। इसी कारण इस बात की संभावना बनती है कि 'नाटो' में शामिल अमरीका के साथी देश उसके वर्चस्व पर कुछ नियंत्रण लगा सकें।

हमारे विचार में अमरीका के वर्चस्व पर दूसरा व्यवधान ही सबसे महत्त्वपूर्ण साबित होगा क्योंकि अमरीका एक लोकतांत्रिक देश है। अमरीका के नागरिक संपन्न और सुशिक्षित हैं। वे किसी भी ऐसे व्यक्ति/सरकार/राजनीतिक दल को अनुमति नहीं देंगे कि वह अपने वर्चस्व के लिए सारी मानवजाति को तीसरे महायुद्ध की आग में झोंक दे या अपनी मनमानी के द्वारा आंतकवादियों के निशाने पर स्थायी बिंदु बना दे अथवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर असंतोष/ईर्ष्या/शत्रुता अमरीका के लिए अंदर-अंदर ही पनपती रहे। अमरीका के लोग अंततः स्वतंत्र जीवन सभी के लिए चाहेंगे। जनमत की अवहेलना कोई भी लोकतांत्रिक नेता/सरकार या राजनैतिक दल नहीं कर सकता। अमरीका के विदेशी सैन्य अभियानों पर वहाँ का लोकमत अंकुश रखता है और भविष्य में भी रखेगा, वही कारगर भूमिका निभाएगा। जहाँ तक नाटो का प्रश्न है उसके सदस्य-विचारधारा, वित्तीय साधनों, सैन्य शक्ति और यहाँ तक कि धार्मिक और जातिगत संबंधों से भी अमरीका के साथ बहुत ज्यादा घनिष्ठ हैं। उनमें भी फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी को छोड़कर प्रायः सभी सदस्य अमरीका के वर्चस्व पर नियंत्रण लगाने की शायद ही सोच सकें।

8. भारत-अमरीका समझौते से संबंधित बहस के तीन अंश इस अध्याय में दिए गए हैं। इन्हें पढ़ें और किसी एक अंश को आधार मानकर पूरा भाषण तैयार करें जिसमें भारत-अमरीकी संबंध के बारे में किसी एक रुख का समर्थन किया गया हो।

उत्तर भारत और अमरीका के मध्य परमाणु ऊर्जा के मुद्दे पर समझौता हुआ। भारत की लोकसभा में इस मुद्दे पर बहस हुई। हम देश के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के विचारों से सहमत होकर भारत-अमरीकी संबंधों के बारे में निम्नलिखित भाषण तैयार कर सकते हैं–

मान्यवर हमारे विचारानुसार इसमें कोई शक नहीं है कि अमरीका विश्व की एक महाशक्ति है। यह भी सच है कि शीत युद्ध के दौरान (1945-1991) भारत अमरीकी गुट के विरुद्ध खड़ा था। भारत लगभग 45-46 वर्षों में मित्रता की दृष्टि से विश्व की दूसरी महाशक्ति सोवियत संघ और उसके समर्थक देशों के साथ था लेकिन अब तो सोवियत संघ ही नहीं रहा। उनके 15 गणतंत्र उससे अलग हो गए हैं। सोवियत संघ बिखर गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति को अमरीका की ओर बदला है। निःसंदेह भारत ने 1991 में ही नई आर्थिक नीति अपनाने की घोषणा की। वर्तमान प्रधानमंत्री ही उस समय देश के वित्त मंत्री थे और कांग्रेस पार्टी की ही सरकार थी। उस समय भी भारत मानता था और आज भी वर्तमान सरकार मानती है कि ताकत की राजनीति अब भी बीते दिनों की बात नहीं कही जा सकती। भारत स्वयं महाशक्ति बनना चाहता है। हम मानते हैं कि भारत के विकास के मार्ग में अमरीका जैसी महाशक्ति अवरोध ला सकती है या अपनी शर्तें थोप सकती है। ऐसा वह पहले भी करता रहा है। हमारा कोई भी राष्ट्रीय नेता या राजनैतिक दल हमारे देश की सुरक्षा पर आँच नहीं आने देगा। क्योंकि यह देश अधिकांश राष्ट्रभक्त-नागरिकों का देश है परंतु वर्तमान परिस्थितियों में देश के लिए आर्थिक और सैनिक लाभ न उठाना और परमाणु समझौते को न लागू करना भी ठीक नहीं होगा।

9. "यदि बड़े और संसाधन संपन्न देश अमरीकी वर्चस्व का प्रतिकार नहीं कर सकते तो यह मानना अव्यावहारिक है कि अपेक्षाकृत छोटी और कमजोर राज्येतर संस्थाएँ अमरीकी वर्चस्व का कोई प्रतिरोध कर पाएंगी।" इस कथन की जाँच करें और अपनी राय बताएँ।

उत्तर मेरी राय के अनुसार यह कथन बिल्कुल सत्य है। आज कोई संदेह नहीं कि अमरीका विश्व का सबसे धनी और सैन्य दृष्टि से शक्तिशाली देश है। आज वैचारिक दृष्टि से भी पूँजीवाद, समाजवाद को बहुत पीछे छोड़ चुका है। सोवियत संघ लगभग 70 वर्षों तक पूँजीवाद के विरुद्ध लड़ा। वहाँ के लोगों को अनेक नागरिक और स्वतंत्रता के अधिकारों से वंचित रहना पड़ा। वहाँ विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। एक ही राजनैतिक पार्टी की तानाशाही थी परन्तु वहाँ के लोगों ने महसूस किया कि उपभोक्ता संस्कृति और विकास की दर से पश्चिमी देशों की तुलना में न केवल सोवियत संघ बल्कि अधिकांश पूर्वी देश भी पिछड़ गए। आज विश्व में सबसे बड़ा साम्यवादी देश चीन है। वहाँ पर भी ताइवान, तिब्बत और अन्य क्षेत्रों में अलगाववाद, उदारीकरण, वैश्वीकरण के पक्ष में आवाज उठती रहती है, माहौल बनता रहा। जब ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, भारत और चीन जैसे बड़े देश अमरीका के वर्चस्व को खुलकर चुनौती नहीं दे सकते तो छोटे देश जिनकी संख्या 160-170 से भी ज्यादा है, वे अमरीका को चुनौती किस प्रकार से दे सकेंगे। वस्तुतः हाल में यह सोचना गलत होगा। छोटी और कमजोर राज्येतर संस्थाएँ अमरीकी वर्चस्व का कोई प्रतिरोध नहीं कर पाएँगी। अभी तो उदारीकरण, वैश्वीकरण और नई अर्थव्यवस्था का बोलबाला है जो अमरीकी छत्रछाया में ही परवान चढ़ रहे हैं।

अतिरिक्त प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1 किस देश ने 1990 के अगस्त में कुवैत पर हमला कर दिया?

उत्तर इराक ने।

प्रश्न 2 ऑपरेशन डेजर्ट स्टार्म नामक अभियान किसके खिलाफ चलाया गया था और क्यों?

उत्तर यह संयुक्त राष्ट्रसंघ का सैन्य अभियान इराक के खिलाफ था क्योंकि इराक ने जबरन कुवैत पर अपना कब्जा जमा लिया था।

प्रश्न 3 क्लिंटन सरकार ने किस प्रकार की विदेश-नीति अपनाई?

उत्तर क्लिंटन सरकार ने सैन्य-शक्ति तथा सुरक्षा जैसी कठोर राजनीति के स्थान पर लोकतंत्र के बढ़ावे, जलवायु-परिवर्तन तथा विश्व व्यापार जैसे नरम मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रश्न 4 'ऑपरेशन इनफाइनाइट रीच' क्या था?

उत्तर यह एक अमरीकन सैनिक अभियान था जिसके अंतर्गत अमरीका द्वारा सूडान तथा अफगानिस्तान के अल-कायदा के ठिकानों पर अनेकों बार क्रूज मिसाइल से हमले किए गए।

प्रश्न 5 11 सितंबर 2001 के दिन अमरीका में क्या हुआ था?

उत्तर आतंकवादियों द्वारा न्यूयार्क स्थित वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के उत्तरी और दक्षिणी टावर को उड़ा दिया गया। उसी दिन 'पेंटागन' को उड़ाने की भी कोशिश की गई।

प्रश्न 6 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' क्या था?

उत्तर अमरीका द्वारा संचालित यह सैन्य आक्रमण इराक के खिलाफ था।

प्रश्न 7 'ऑपरेशन इराकी फ्रीडम' के पीछे अमरीका का असली मकसद क्या था?

उत्तर इराक के तेल-भंडार पर कब्जा करना और इराक में अमरीका की मनपसंद सरकार बनवाना।

प्रश्न 8 वैश्विक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सार्वजनिक वस्तु का सबसे अच्छा उदाहरण क्या है?

उत्तर समुद्री व्यापार मार्ग, जिनका इस्तेमाल व्यापारिक जहाज द्वारा किया जाता है।

प्रश्न 9 भारत द्वारा साफ्टवेयर के क्षेत्र में अधिकतम निर्यात किस देश को किया जाता है?

उत्तर अमरीका को (लगभग 65 प्रतिशत)।

प्रश्न 10 सोवियत राजनीतिक प्रणाली किस विचारधारा पर आधारित थी?

उत्तर सोवियत राजनीतिक प्रणाली समाजवादी विचारधारा पर आधारित थी।

प्रश्न11 इराक पर अमरीकी आक्रमण के दो वास्तविक उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर इराक पर अमरीकी आक्रमण के दो वास्तविक उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(*i*) इराक पर अमरीका द्वारा आक्रमण का पहला उद्देश्य इराक के तेल भंडार पर अमरीकी नियंत्रण बनाना। अमरीका एक विकसित देश है। यद्यपि उसके पास विश्व में लगभग तेल के 40 प्रतिशत संसाधन मौजूद हैं परन्तु वह तेल के लिए हमेशा लालायित रहता है। वह इराक सहित सभी तेल उत्पादक देशों को नियंत्रण में रखना चाहता है ताकि उसकी यातायात, सैन्य और अन्य संबंधित तेल आवश्यकताओं के साधन कभी भी किसी संकट का सामना न करें।

(*ii*) इराक पर अमरीकी आक्रमण का दूसरा उद्देश्य है कि अमरीका चाहता है कि इराक में उसकी मनपसंद सरकार कायम रहे ताकि कुवैत सहित अन्य खाड़ी और तेल उत्पादक देश उसके मित्र और सहयोगी बने रहें। अमरीका अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए इराक सहित सभी देशों में अपनी मनपसंद सरकार कायम रखना चाहता है।

प्रश्न12 इतिहास हमें वर्चस्व के संबंध में क्या सिखाता है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर शक्ति-संतुलन के तर्क को देखते हुए वर्चस्व की स्थिति अंतर्राष्ट्रीय मामलों में एक असामान्य परिघटना है। इसका कारण बहुत ही स्पष्ट है। विश्व-सरकार जैसी कोई चीज नहीं होती और ऐसे में प्रत्येक देश को अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करनी होती है। कभी-कभी बहुत ही विपरीत परिस्थितियों में उसे यह भी सुनिश्चित करना होता है कि कम-से-कम उसका अस्तित्व बचा रहे। इस वजह से अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था में विभिन्न देश शक्ति-संतुलन को लेकर बड़े सतर्क होते हैं और आमतौर पर वे किसी एक देश को इतना ताकतवर नहीं बनने देते कि वह बाकी देशों के लिए भयंकर खतरा बन जाए।

ऊपर जिस शक्ति-संतुलन की बात कही गई है उसे इतिहास से भी पुष्ट किया जा सकता है। चलन के मुताबिक हम 1648 को वह साल स्वीकार करते हैं जब संप्रभु राज्य विश्व राजनीति के प्रमुख किरदार बने। इसके बाद से साढ़े तीन सौ वर्ष बीत चुके हैं। इस दौरान केवल दो अवसर आए जब किसी एक देश ने अंतर्राष्ट्रीय पटल पर वही प्रबलता प्राप्त की जो आज अमरीका को प्राप्त है। यूरोप की राजनीति के संदर्भ में 1660 से 1713 तक फ्रांस का दबदबा था और यह वर्चस्व का पहला उदाहरण है। ब्रिटेन का वर्चस्व और समुद्री व्यापार के बूते कायम हुआ उसका साम्राज्य 1860 से 1910 तक बना रहा। यह वर्चस्व का दूसरा उदाहरण है।

इतिहास यह भी बताता है कि वर्चस्व अपने चरमोत्कर्ष के समय अजेय जान पड़ता है, परन्तु यह सदैव के लिए कायम नहीं रहता। इसके ठीक विपरीत शक्ति-संतुलन की राजनीति वर्चस्वशील देश की ताकत को आने वाले समय में कम कर देती है। 1660 में लुई 14वें के शासनकाल में फ्रांस, अपराजेय था लेकिन 1713 तक इंग्लैंड, हैब्सबर्ग, आस्ट्रिया और रूस फ्रांस की ताकत को चुनौती देने लगे। 1860 में विक्टोरियाई शासन का सूर्य अपने पूरे उत्कर्ष पर था और ब्रिटिश साम्राज्य हमेशा के लिए सुरक्षित लगता था। 1910 तक यह स्पष्ट हो गया कि जर्मनी, जापान और अमरीका ब्रिटेन की ताकत को ललकारने के लिए उठ खड़े हुए हैं। इसी तरह, अब से 20 साल बाद एक और महाशक्ति या कहें शक्तिशाली देशों का गठबंधन उठ खड़ा हो सकता है क्योंकि तुलनात्मक रूप से देखें तो अमरीका की ताकत कमजोर पड़ रही है।

प्रश्न13 भारत अमरीकी संबंधों का विश्लेषण कीजिए–

उत्तर *भारत-अमरीकी संबंधों का विश्लेषण:* स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व अमरीका ने ब्रिटेन पर दबाव डाला था कि भारत को स्वतंत्रता दे दी जाए परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति का अनुसरण किया। इस कारण से अमरीका भारत से नाराज हुआ और भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को सहायता दी गयी।

बाद के वर्षों में अमरीका से संबंध सामान्य बने हैं परन्तु अमरीका द्वारा पाकिस्तान को अस्त्र-शस्त्रों की निरंतर सप्लाई से संबंधों में मधुरता नहीं आई। यद्यपि अमरीका ने पाकिस्तान की कश्मीर में घुसपैठ की निंदा कर सराहनीय कार्य किया था।

भारत-अमरीकी संबंधों का विश्लेषण:

निःसंदेह अमरीका विश्व की एक महाशक्ति है। यह भी सही है कि शीत युद्ध के वर्षों में भारत अमरीकी गुट के खिलाफ खड़ा था। भारत इन वर्षों में मित्रता की दृष्टि से विश्व की दूसरी महाशक्ति सोवियत संघ और उसके समर्थक देशों के साथ

था लेकिन सोवियत संघ के विघटन के बाद उसके 15 गणतंत्र उससे अलग हो गए हैं। सोवियत संघ बिखर गया है। अतः भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था का उदारीकरण करने एवं उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ने के लिए अपनी विदेश नीति को अमरीका की ओर बदला।

हम यह भी मानते हैं कि भारत की प्रगति के मार्ग में अमरीका जैसी महाशक्ति अवरोध ला सकती है या अपनी शर्तें थोप सकती है। ऐसा वह पहले भी करता रहा है। हमारा कोई भी राष्ट्रीय नेता या राजनीतिक दल हमारे देश की सुरक्षा पर आँच नहीं आने देगा क्योंकि यह देश अधिकांश राष्ट्रभक्त-नागरिकों का देश है परन्तु वर्तमान परिस्थितियों में देश के लिए आर्थिक और सैनिक लाभ न उठाना और परमाणु समझौते को न लागू करना भी ठीक नहीं ठहराया जा सकता। भारत सभी शक्तिशाली और बड़े देशों के साथ मित्रता के संबंध बनाए रखना चाहता है।

भारत और अमरीका के मध्य हाल ही में परमाणु ऊर्जा के मुद्दे पर एक समझौता हुआ भारत की लोकसभा में इस मुद्दे पर जोरदार बहस हुई। अंततः यह समझौता लागू हो गया है। भारत और अमरीका के संबंध इस समय बहुत ही मधुर हैं। संयुक्त राज्य अमरीका हमारा एक अच्छा मित्र है और मित्र रहेगा। हाल के वर्षों में प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि दर के कारण भारत अब संयुक्त राज्य अमरीका सहित अनेक देशों के लिए एक आकर्षक आर्थिक सहयोगी बन गया है। अनेक तथ्य यह बताते हैं कि भारत का निर्यात अमरीका को सबसे अधिक है। भारतीय मूल के नागरिक और प्रवासी भारतीय अमरीका में तकनीकी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी सेवाओं में संलग्न हैं। जो लोग भारत और अमरीका की बढ़ती हुई दोस्ती से भयभीत हैं वस्तुतः अमरीका के प्रति या तो अपने राजनैतिक विचारधारा के कारण दुर्भाव रखते हैं या वह भूल जाते हैं कि अमरीका और भारत दोनों ही लोकतांत्रिक और उदारवादी देश हैं। यह भी आवश्यक है कि हमें देश की सुरक्षा के साथ किसी भी कीमत पर अनदेखी नहीं करनी चाहिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर पर (✓) का चिन्ह लगाइए:–

प्रश्न 1 अमरीका के वर्चस्व की शुरुआत कब हुई?
(क) 1990 (ख) 1991 (ग) 1992 (घ) 1993

प्रश्न 2 किस देश ने 1990 में कुवैत पर आक्रमण कर दिया था?
(क) इराक (ख) इरान (ग) मिस्र (घ) सउदी अरब

प्रश्न 3 प्रथम खाड़ी युद्ध किस-किस के बीच हुआ था?
(क) इरान और इराक (ख) इराक और अमरीका
(ग) इराक और संयुक्त राष्ट्र के 34 देश के सैनिक (घ) इरान और संयुक्त राष्ट्र की सेना

प्रश्न 4 आतंकवादियों ने 11 सितम्बर 2001 में किसे ध्वस्त कर दिया था?
(क) न्यूयार्क का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (ख) वाशिंगटन का ट्रेड सेंटर
(ग) मैनचेस्टर का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर (घ) पेंटगन का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर

प्रश्न 5 19 मार्च 2003 को अमरीका ने किस कुटनाम से इराक पर सैन्य आक्रमण किया?
(क) ऑपरेशन विजय (ख) ऑपरेशन फ्रीडम (ग) ऑपरेशन इराकी फ्रीडम (घ) ऑपरेशन डेजर्ट

प्रश्न 6 'हेगेमनी' शब्द की जड़ें किस देश से जुड़ी हैं?
(क) अमरीका (ख) यूनान (ग) रूस (घ) इराक

प्रश्न 7 निम्नलिखित में किसका संबंध वैश्विक अर्थव्यवस्था की एक विशेष समझ से है?
(क) हेंगेमनी (ख) वर्चस्व (ग) वैश्विक शक्ति (घ) उपरोक्त में कोई नहीं।

प्रश्न 8 आज अमरीका का दबदबा किन-किन क्षेत्रों में से देखा जा सकता है?
(क) सैन्य (ख) आर्थिक (ग) सांस्कृतिक (घ) उपरोक्त सभी।

प्रश्न 9 सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भारत के कुल निर्यात का 65 प्रतिशत किस देश को जाता है?
(क) फ्रांस (ख) इटली (ग) अमरीका (घ) ब्रिटेन

प्रश्न 10 'सिलिकन वैली' में कितने भारतीय काम करते हैं?
(क) लगभग एक लाख (ख) लगभग दो लाख (ग) लगभग तीन लाख (घ) लगभग चार लाख

उत्तर : 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)
6. (ख) 7. (ख) 8. (घ) 9. (ग) 10. (ग)

eVidyarthi